सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी (केन्द्रिक) सेट-3
2015 (बाहरी दिल्ली कंपार्टमेंट)

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो रहना ही भले आदमी की चाल है। परन्तु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। ज़रा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध ज़हरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं। समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं और धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फसाद और टटे की पसंद नहीं करती परन्तु इतनी तेजी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते। अगर लाखों-करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें ज़रूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर जो हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं। यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा। और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(ख) लेखक ने किसे कठिन समस्या माना है और क्यों? (2)

(ग) आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है और क्यों? (2)

(घ) चुप रहना कब खतरनाक होता है, कैसे? (2)

(ङ) भारतवर्ष की कोई एक विशेषता गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

(च) लेखक ने संघर्ष करना क्यों आवश्यक माना है? (2)

(छ) आशय स्पष्ट कीजिए: (2)

'राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं।'

(ज) विग्रह कर समास का नाम लिखिए - जीवन-मरण (1)

(झ) मिश्र वाक्य में बदलिए- (1)

'झूठी बातों को सुनकर चुप हो रहना ही भले आदमी की चाल है।'

उत्तर- (क) स्वार्थ और संघर्ष (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य।)

(ख)

- झूठी बातों को सुन कर भी कुछ नहीं कर सकना।
- क्योंकि कुछ कहने और विरोध करने पर सच बोलने वाले के विरोध में वातावरण तैयार करना।

(ग)

- समाचार के तीव्र साधनों की सबलता।
- , शांति का अभाव।
- विरोध करने में अक्षम।

(घ)

- , दंगा-फसाद को देख कर चुप रहना खतरनाक।
- जब हम अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझते।

(ङ)

- भारत वर्ष की आत्मा कभी किसी दंगा-फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती।
- अन्याय का विरोध, सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ता।

(च)

- संघर्ष से बदलाव संभव।
- स्वार्थी व्यक्तियों से संघर्ष कर आम आदमी को हक दिलाना।

(छ)

- ध्यानस्थ रहकर अपने आराध्य का नाम लेना।
- लगातार नाम (आराध्य, ब्रह्म) का जाप करना।

(ज) जीवन और मरण – द्वंद्व समास।

(झ) भले आदमी की यह चाल है कि झूठी बातों को सुनकर चुप रह जाए।

(अन्य उचित उत्तर अपेक्षित)

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (5)

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।

सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे।

किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे।

निर्झर में गति है जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।

धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,

बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है,

तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है बढ़े चलो ! देखो मत पीछे मुड़ कर,

यौवन कहता है बढ़े चलो ! सोचो मत क्या होगा चल कर।

चलना है केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है,

रुक जाना है मर जाना है, निर्झर यह झर कर कहता है।

(क) जीवन की तुलना निर्झर से क्यों की गई है?

(ख) जीवन और निर्झर में क्या समानता है?

(ग) जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

(घ) 'तब यौवन बढ़ता है आगे !' से क्या आशय है?

(ङ) कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- (क) निर्झर की तरह सतत प्रवाहमान है।

(ख)

- मस्ती और गतिवान
- , उतार-चढ़ाव

(ग) कठिनाइयों और संघर्षों के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना।

(घ) जीवन में सामर्थ्य और पुरुषार्थ ही आगे बढ़ता है।

(ङ)

- जीवन आगे बढ़ने का नाम।
- सुख-दुख जीवन की सौगात।
- संघर्ष और पुरुषार्थ के साथ आगे बढ़ना।

खण्ड-'ख'

3. नीचे लिखे विषय में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (5)

(क) भारतीय किसान

(ख) हमारे राष्ट्रीय पर्व

(ग) राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

(घ) प्रदूषण की समस्या

उत्तर-

- भूमिका –(1)
- विषय वस्तु –(3)

- भाषा –(1)

4. नेपाल के संकट में राहत कार्य में भाग लेने के लिए आप अपने चार मित्रों के साथ काठमांडू जाना चाहते हैं। अनुमति पत्र प्राप्त करने के लिए नई दिल्ली स्थित नेपाली राजदूत को पत्र लिखिए। (5)

उत्तर-

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ –(1)
- विषय वस्तु – (3)
- भाषा –(1)

अथवा

न्यूयॉर्क से छपने वाले भारत-समाचार के संपादक को पत्र लिखकर वहाँ बसे भारतीयों से अपील करते हुए भारतीय पर्व-त्यौहार मनाने का अनुरोध कीजिए।

उत्तर-

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ –(1)
- विषय वस्तु – (3)
- भाषा –(1)

5. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए: (5)

(क) संपादकीय विभाग के दो प्रमुख कार्यों को लिखिए।

(ख) भारत में मूक फिल्म बनाने का श्रेय किसको जाता है?

(ग) भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?

(घ) 'खोजपरक पत्रकारिता' से आप क्या समझते हैं?

(ङ) पत्रकारिता में 'मुखड़ा' किसे कहते हैं?

उत्तर- (क)

- संपादन
- प्रकाशन

(ख) दादा साहेब फाल्के

(ग)

- 1556 में
- गोवा में

(घ) जिन सूचनाओं या घटनाओं को छिपाने या दबाने का प्रयास किया जाता हे उसे गहराई से छान बीन कर उजागर करना।

(ङ) मुख्य समाचार को।

6. 'धर्म की आड़ में व्याप्त भ्रष्टाचार' अथवा 'दहेज प्रथा का कुप्रभाव' विषय पर एक फीचर तैयार कीजिए। (5)

उत्तर-

- विषय वस्तु- (2)
- प्रस्तुति – (2)
- भाषा – (1)

7. 'बढ़ती मँहगाई' अथवा 'लचर कानून व्यवस्था' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए। (5)

उत्तर-

- विषय वस्तु – (3)
- प्रभावी प्रस्तुति – (1)
- भाषा – (1)

खण्ड-'ग'

8. प्रस्तुत काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)

हो जाए न पथ में रात कहीं

मंजिल भी तो है दूर नहीं

यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

बच्चे प्रत्याशा में होंगे

नीड़ों से झाँक रहे होंगे

यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितना चंचलता है !

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(क) पंथी क्या सोच रहा है और क्यों?

(ख) बच्चे नीड़ों से क्यों झाँकते होंगे?

(ग) कवि को किस बात की चिंता है और क्यों?

(घ) चिड़ियाँ चंचल क्यों हो रही हैं?

उत्तर- (क)

- घर पहुँचने में देर न हो जाए।
- क्योंकि बच्चे राह देख रहे होंगे।
- उनसे मिलने की बेचैनी।

(ख)

- अपने माता-पिता की प्रतीक्षा में।
- भोजन करने की आशा में।
- उनसे मिलने की बेचैनी में।

(ग)

- रास्ते में कोई व्यवधान न हो जाए।
- समय का तेजी से बीतना।
- मंजिल मिलने में देर न हो।

(घ)

- अपने बच्चे को याद कर।
- अपने घोंसले में जल्दी से जल्दी पहुँचने की इच्छा के कारण।

अथवा

अट्टालिका नहीं है रे

आतंक भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन

क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से

सदा छलकता नीर

रोग-शोक में भी हँसता है

शैशव का सुकुमार शरीर।

(क) कवि आतंक भवन किसे मानता है और क्यों?

(ख) 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए-

'सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन।'

(घ) शैशव का क्या अर्थ है? इसका यहाँ किस संदर्भ में प्रयोग हुआ है?

उत्तर- (क)

- धनी वर्ग को।
- शोषण करने वाले को।
- ऊँचे-ऊँचे घरों में रहने वाले लोगों को।

(ख)

- पंक-कीचड़ , शोषित वर्ग
- जलज-कमल , शोषक वर्ग।

(ग)

- सामाजिक परिवर्तन शोषित वर्ग द्वारा आंदोलन से होता है।
- अत्याचार ,अन्याय तथा हिंसा का शिकार भी शोषित वर्ग ही होता है।

(घ)

- शिशु।
- कठिनाइयों में भी शिशु अनजान बन मुस्कुराता है।
- शोषित वर्ग भी कठिनाइयों में मुस्कुराता है।

9. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (6)

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।

(क) 'उत्प्रेक्षा अलंकार' के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ख) कविता के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।
- गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो।

(ख)

- सूर्योदय से पहले के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण।
- गतिशील शब्द-चित्र।

- आलंकारिक वर्णन।
- बोलचाल की हिन्दी भाषा।

(ग)

- सूर्योदय होने के दृश्य का वर्णन।
- सूर्य ऐसे निकल रहा है जैसे किसी ने काली सिल को केसर से धो दिया है। या किसी ने काली सिल पर लाल ख़ड़िया मल दी हो।
- नीले आकाश से सूर्य ऐसे उदित हो रहा है जैसे कोई गौर वर्णीय युवती नीले जल से बाहर आ रही हो।

अथवा

सबसे तेज बौछारें गई भादो गया

सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुण्ड को।

(क) शरद ऋतु के आगमन की उपमा किससे दी गई है और क्यों?

(ख) 'शरद आया पुलों को पार करते हुए' - पंक्ति में कौन सा अलंकार है? प्रयुक्त अलंकार का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) काव्यांश में प्रयुक्त बिम्ब का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- खरगोश की आँखों से
- चमकीली साईकिल से
- ये दोनों अपनी सुंदरता/आकर्षण से किसी को भी आकर्षित कर लेते हैं।

(ख)

- मानवीकरण।
- शरद ऋतु डाकिये के समान साइकिल पर सवार घंटी बजाते हुए पुलों को पार करते हुए उत्साह के साथ आ रही है।

(ग)

- बिंबों के माध्यम से सौंदर्य और अनुभूति का सहज प्रकटीकरण।
- चित्र-बिंब।
- ध्वनि-बिंब।
- गतिशील बिंब।

10. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (6)
(क) कविता और बच्चे को 'कविता के बहाने' समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?
(ख) 'परदे पर वक्त की कीमत है' - कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?
(ग) 'नभ में पाँती-बँधे बगुलों की पाँखें' - कवि की आँखों को चुराकर लिए जा रही है - कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- कविता में कल्पना द्वारा उड़ने की सीमा नहीं होती है वैसे ही बच्चों की कल्पना की भी कोई सीमा नही होती।
- दोनों कल्पना द्वारा कहीं भी किसी समय जा सकते हैं।

(ख)

- संवेदनशील रह कर व्यक्ति को वस्तु के रूप में प्रयोग का विरोध।
- बाजार का मुनाफ़े से मतलब लाभ कमाना।
- बाजार के पास संवेदना नहीं।

(ग)

- प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण।
- पक्षी और प्रकृति की सुंदरता की अनुभूति की अभिव्यक्ति।
- कवि की भावनाओं का सुंदरता में विलय।

11. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)
उस बल को नाम जो दो, पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक धार्मिक, नैतिक कहते हैं; मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखें और

प्रतिपादन करूं। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उस बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए, तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रभावित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

(क) 'अपर जाति का तत्व' किसे कहा गया है और क्यों?
(ख) लेखक ने अबलता किसे माना है?
(ग) 'निर्बल ही धन की ओर झुकता है।' - आशय स्पष्ट कीजिए।
(घ) 'बटोर रखने की स्पृहा' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- (क)

- अभिजात वर्ग को।
- संसार का वैभव, वस्तु प्राप्त कर भी अतृप्ति।
- संचय की तृष्णा।

(ख)

- संचय की तृष्णा।
- वैभव की चाह।
- धन की ओर झुकाव।
- संतोष न होना-अबलता।

(ग) जिस व्यक्ति में आत्मिक शक्ति का अभाव होता है, वह निर्बल है और वही संतोष के अभाव में धन की ओर झुकता है।

(घ)

- लालची और अतृप्त होना।
- सब कुछ प्राप्त करने की चाह।
- आवश्यकता से अधिक प्राप्त करने की इच्छा।

अथवा

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय, लछिमन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के

व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था।

(क) विमाता ने भक्तिन को उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से क्यों भेजा?

(ख) भक्तिन के प्रति सास का अप्रत्याशित अनुग्रह क्या था?

(ग) 'उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए' - आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था।' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- विमाता भक्तिन से ईर्ष्या करती थी।
- उसे भय था कि उसका पति संपत्ति में से भक्तिन को कुछ न कुछ देगा।

(ख)

- पिता की मृत्यु की सूचना छिपा कर मायके भेजना।
- पहना-ओढ़ा कर तैयार कर उत्साह से भेजना।

(ग)

- सास द्वारा मायके भेजने पर उत्साहित, खुशी, पिता की मृत्यु की सूचना नहीं।
- गाँव पहुँचते ही लोगों द्वारा सहानुभूति के स्वर सुन कर दुखी होना, उत्साह ठंढा पड़ जाना।

(घ)

- पिता की मृत्यु हो गई थी।
- विमाता की सहानुभूति न मिली।
- आदर-सत्कार मायके में न मिलना।
- भक्तिन को उलाहना मिलना।

12. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (12)

(क) भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं - पठित पाठ के आधार पर कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है - 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'काले मेघा पानी दे पाठ लोक-विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण है - कैसे?

(घ) लुट्टन सिंह पहलवान की कीर्ति दूर-दूर तक कैसे फैल गई?

(ङ) लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा - जैसे उद्गार किस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं?

उत्तर- (क)

- भक्तिन गुण-अवगुण से अछूती नहीं।
- सरल स्वभाव, मेहनती, दृढ़ता।
- पैसेको ऐसे सँभालती कि ऐसी विशेषता दुर्लभ।
- लेखिका के लिए झूठ बोलने से परहेज नहीं, देहातिन की तरह रहना आदि।
  (अन्य बिन्दु भी स्वीकार्य)

(ख)

- बाजार उसके लिए सार्थक जो क्या खरीदना है, वह जानता है।
- खरीदने वालों की चाहत से ही बाजार की उपयोगितां
- पर्चेजिंग पावर वाले बाजार के महत्व का सत्यानाश कर, उसे विनाशक बना देते हैं।

(ग)

- भारतीय समाज में लोक विश्वास व्याप्त।
- लोक-विश्वास तथा विज्ञान के बीच द्वंद्व।
- विज्ञान द्वारा सुख-सुविधा की चाहत, विज्ञान के सिद्धांतों को आत्मसात नहीं करना।
- सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यों की अवहेलना।
- लेखक विज्ञान के साथ जबकि जीजी लोक-विश्वास के साथ।

(घ)

- श्याम नगर दंगल में जब चाँद सिंह को पछाड़ा।
- राजा साहेब द्वारा पुरस्कार तथा राज-दरबार का पहलवान घोषित।
- चारों तरफ चर्चा।

(ङ)

- विस्थापन का दर्द जीवन भर चलता है।
- राजनीतिक रेखाओं को भावनाएँ स्वीकार नहीं करतीं।
- यथार्थ परिस्थितिवश आरोपित।
- पुरानी जगहों से लगाव।

13. 'जूझ' कहानी में निहित जीवन मूल्यों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। (5)

उत्तर-

- साहस।
- परिश्रम।
- बड़ों का आदर।
- लगन, कर्म के प्रति समर्पण।
- पाठ के संदर्भ में एक-दो उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण।

14. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)

(क) 'जूझ' का कथानायक किशोर छात्रों के लिए एक आदर्श प्रेरणास्रोत है - कहानी के आधार पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।
(ख) औरतों को बहादुर सिपाहियों से ज्यादा संघर्ष करने वाली क्यों बताया गया है? 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर लिखिए।
(ग) यशोधर बाबू में नये और पुराने का द्वंद्व है - उदाहरण देकर प्रतिपादित कीजिए।

उत्तर- (क)

- आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद पढ़ाई करने की चाहत।
- घर का कामकाज कर स्कूल जाना।
- परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना।
  (पाठ के संदर्भ में विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति भी स्वीकार्य)

(ख)

- स्त्री का जीवन संघर्षमय।
- पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर संघर्ष।
- नारी बच्चे को जन्म देते समय पीड़ा व कष्ट सहती है।
- पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण स्त्रियों पर शासन।
- स्त्री युद्ध लड़ने वाले सैनिकों से कम नहीं।
  (अन्य उपयुक्त बिंदुओं के साथ उत्तर भी स्वीकार्य)

(ग)

- यशोधर बाबू आदर्शवादी व्यक्ति यशोधर बाबू का चरित्र समय के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता।
- बच्चों की सफलता अच्छी भी लगती है और योग्यता पर संदेह भी होता है।
- भाव और विचार में द्वंद्व।
- आधुनिक मूल्यों को अपनाने ओर छोड़ने में भी द्वंद्व दिखाई देता है।